अभ्यास ६ (व्याकरण)

शब्दकोष—१२५+२५=१५०)

(क) धनम् (धन), नगरम् (नगर), आसनम् (आसन), अध्ययनम् (पढ़ना), ज्ञानम् (ज्ञान), कार्यम् (कार्य), ओदनम् (चावल), वर्षम् (वर्ष), दिनम् (दिन)। (९) (ख) खाद् (खाना), धाव् (दौड़ना), क्रीड् (खेलना), चल् (चलना)। अधिशी (सोना), अधिस्था (बैठना) अध्यास् (बैठना), (७)। (ग) उभयतः (दोनों ओर), सर्वतः (चारों ओर), धिक् (धिक्कार), उपरि (पर), अधः (नीचे), अधि (अन्दर), अन्तरा (बीच में), अन्तरेण (बिना), विना (बिना)। (९)।

सूचना—(क) धन—दिन गृहवत्। (ख) खाद्—चल्, भवतिवत्।

व्याकरण (गृह, लोट्, द्वितीया)

१. शब्दरूप—'गृह' शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्दरूप सं० २०)। गृह के संक्षिप्त रूप लगाकर धन आदि के रूप बनावें। सभी अकारान्त नपुंसक शब्द गृह के तुल्य चलेंगे।

☞नियम १६— र् और ष् के बाद न् को ण् हो जाता है, यदि अट् (स्वर, ह, य, व, र), कवर्ग, पवर्ग, आ, न्, बीच में हों तो भी। जैसे—इन शब्दों में यह नियम लगेगा—गृह, नगर, कार्य, वर्ष, पुष्प, पत्र। अतः इनमें प्र० और द्वि० बहु० में 'आणि', तृ० एक० में 'एण', ष० बहु० में 'आणाम्' लगेगा।

३. धातुरूप—'भू'—लोट् (आज्ञा अर्थ)

भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्र० पु०
भव	भवतम्	भवत	म० पु०
भवानि	भवाव	भवाम	उ० पु०

संक्षिप्तरूप—

एक०	द्वि०	बहु०	
अतु	अताम्	अन्तु	प्र० पु०
अ	अतम्	अत	म० पु०
आनि	आव	आम	उ० पु०

सूचना—खाद् आदि के रूप भवतु के तुल्य चलेंगे। जैसे—खादतु, धावतु, क्रीडतु, चलतु, कथयतु, भक्षयतु। लट् में अधिशी > अधिशेते, अधिस्था > अधितिष्ठति, अध्यास् > अध्यास्ते।

कारक (द्वितीया)

* नियम १७— उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽधः और अध्यधि के साथ द्वितीया होती है। जैसे—ग्रामम् उभयतः। ग्रामं सर्वतः। धिक् नास्तिकम्।

* नियम १८— (अन्तरान्तरेण युक्ते) अन्तरा, अन्तरेण और विना के साथ द्वितीया होती है। जैसे—गङ्गां यमुनां च अन्तरा प्रयागः अस्ति (गंगा-यमुना के बीच में प्रयाग है)। ज्ञानमन्तरेण न सुखम्। श्रमं विना न धनम्।

* नियम १९— (अधिशीङ्स्थासां कर्म) अधिशी, अधिस्था और अध्यास् धातु के साथ द्वितीया होती है। जैसे—आसनम् अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा।

* नियम २०— (कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे) समय और स्थान के दूरीवाची शब्दों में द्वितीया होती है। जैसे—दश दिनानि (१० दिन तक) लिखति। पञ्च वर्षाणि (५ वर्ष तक) पठति। क्रोशं (कोसभर) गच्छति।

अभ्यास ६

१. उदाहरण-वाक्य—१. वह पुस्तक पढ़े—सः पुस्तकं पठतु। २. तू गाँव को जा—त्वं ग्रामं गच्छ। ३. मैं भोजन खाऊँ—अहं भोजनं खादानि। ४. वह आसन पर बैठता है—स आसनम् अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा। ५. वह घर में सोता है—स गृहम् अधिशेते। ६. ग्रामम् उभयतः (गांव के दोनों ओर) जलम् अस्ति। ७. विद्यालयं सर्वतः (विद्यालय के चारों ओर) पुष्पाणि सन्ति। ८. धिक् दुर्जनम्। ९. लोकम् उपर्युपरि (संसार के ऊपर-ऊपर), अधोऽधः (नीचे-नीचे), अध्यधि (अन्दर-अन्दर) ईश्वरः अस्ति। १०. क्रोशं चलतु।

२. संस्कृत बनाओ—**(क)** १. दिनेश पुस्तक पढ़े। २. रमेश खाना खाये। ३. वह दौड़े। ४. वह खेले। ५. राम यहाँ से चले। **(ख)** ६. तू धन की इच्छा कर। ७. तू नगर को जा। ८. तू फूलों को देख। ९. तू ज्ञान की इच्छा कर। १०. तू घर के कार्य को ही देख। **(ग)** ११. मैं चावल पकाऊँ। १२. मैं दौड़ूँ। १३. मैं खेलूँ। १४. मैं चलूँ। १५. मैं फल खाऊँ। **(घ)** १६. नगर के दोनों ओर वन हैं। १७. घर के चारों ओर फल हैं। १८. दुर्जन को धिक्कार। १९. संसार के ऊपर-ऊपर सूर्य है। २०. गाँव के नीचे-नीचे जल है। २१. लोक के अन्दर-अन्दर राम हैं। २२. गाँव और विद्यालय के बीच में (अन्तरा) जल है। २३. धर्म के विना (अन्तरेण, विना) सुख नहीं। २४. रमेश आसन पर बैठता है। २५. पुत्र घर में सोता है। २६. कृष्ण दस वर्ष तक अध्ययन करता है। २७. महेश पाँच दिन तक लिखता है। २८. देवदत्त कोस भर चलता है।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) त्वं पुष्पानि पश्यतु।	त्वं पुष्पाणि पश्य।	१६,१
(२) नगरस्य उभयतः०।	नगरम् उभयतः०।	१७
(३) लोकस्य उपर्युपरि०।	लोकम् उपर्युपरि०।	१७
(४) धर्मस्य अन्तरेण (विना)०।	धर्मम् अन्तरेण (विना)०।	१८
(५) आसने अधितिष्ठति।	आसनम् अधितिष्ठति।	१९

४. अभ्यास—**(क)** २ (क) (ख) (ग) को बहुवचन बनाओ। **(ख)** पूरे रूप लिखो—ज्ञान, धन, कार्य, आसन, वर्ष, दिन, फल, पुस्तक, गृह। **(ग)** लोट् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, वद्, दृश्, स्था, पा, कथ्, भक्ष्, खाद्, धाव्, क्रीड्, चल्।

५. वाक्य बनाओ—उभयतः, सर्वतः, अन्तरा, अन्तरेण, अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते।

६. रिक्त स्थलों को भरो—१. ..... उभयतः जलम्। २. ..... सर्वतः पुष्पाणि सन्ति। ३. ..... अन्तरेण न सुखम्। ४. ..... च अन्तरा प्रयागः। ५. ..... अधिशेते। ६. ..... अध्यास्ते।

शब्दकोष—१५०+२५=१७५) **अभ्यास ७** (व्याकरण)

(क) अजा (बकरी), वसुधा (भूमि), सुधा (अमृत), जटा (जटा), क्षमा (क्षमा)। तण्डुलः (चावल), दुग्धम् (दूध), शतम् (सौ या सौ रु०)। (८)। (ख) भ्रम् (घूमना), रुह् (चढ़ना, उगना), त्यज् (छोड़ना), वस् (रहना), नी (ले जाना), ह (ले जाना), कृष् (खोदना, खींचना), वह् (ले जाना, ढोना)। दुह् (दुहना), याच् (माँगना), दण्ड् (दंड देना), रुध् (रोकना), चि (चुनना), ब्रू (बोलना), शास् (बताना), मथ् (मथना), मुष् (चुराना)। (१७)।

सूचना—(क) अजा—क्षमा, रमावत्। तण्डुल—रामवत्। **(ख)** भ्रम्—वह, भवतिवत्।

व्याकरण (रमा, लृट्, द्वितीया द्विकर्मक)

१. शब्दरूप—'रमा' के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्दरूप सं० १३)। 'रमा' के संक्षिप्तरूप लगाकर अजा आदि के रूप बनाओ। नियम १६ इन शब्दों में लगेगा—रमा, क्षमा। सभी आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द रमा के तुल्य चलेंगे।

२.

धातुरूप—'भू'—लृट् (भविष्यत्)			संक्षिप्तरूप—एक०	द्वि०	बहु०
प्र० पु० भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र० पु० (इ) स्यति	(इ) स्यतः	(इ) स्यन्ति
म० पु० भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म० पु० (इ)स्यसि	(इ) स्यथः	(इ) स्यथ
उ० पु० भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ० पु० (इ)स्यामि	(इ) स्यावः	(इ) स्यामः

सूचना—१. (क) इन पूर्वोक्त धातुओं में 'इष्यति' ही लगाकर रूप बनावें—पठिष्यति, लेखिष्यति, गमिष्यति, हसिष्यति, आगमिष्यति, रक्षिष्यति, वदिष्यति, पतिष्यति, स्मृ > स्मरिष्यति, कृ > करिष्यति, अस् > भविष्यति, चुर् > चोरयिष्यति, चिन्त् > चिन्तयिष्यति, कथ् > कथयिष्यति, भक्ष् > भक्षयिष्यति, इष् > एषिष्यति, खाद् > खादिष्यति, धाविष्यति, क्रीडिष्यति, चलिष्यति, भ्रमिष्यति, ह > हरिष्यति, ज्वलिष्यति, चरिष्यति, वृष् > वर्षिष्यति।

(ख) इनमें 'स्यति' लगेगा—पच् > पक्ष्यति, नम् > नंस्यति, दृश् > द्रक्ष्यति, सद् > सत्स्यति, स्था > स्थास्यति, पा > पास्यति, घ्रा > घ्रास्यति, जि > जेष्यति, तुद् > तोत्स्यति, स्पृश् > स्प्रक्ष्यति, प्रच्छ् > प्रक्ष्यति, रुह् > रोक्ष्यति, त्यज् > त्यक्ष्यति, वस् > वत्स्यति, नी > नेष्यति, कृष् > कर्क्ष्यति, वह् > वक्ष्यति, दह् > धक्ष्यति, तप् > तप्स्यति, गै > गास्यति।

२. 'नी' आदि के क्रमशः लट् में इस प्रकार रूप चलेंगे—नयति, हरति, कर्षति, वहति (भवतिवत्)। दोग्धि, याचते, दण्डयति, रुणद्धि, चिनोति, ब्रवीति, शास्ति, मथ्नाति, मुष्णाति।

☞ **नियम २१— ये धातुएँ द्विकर्मक हैं। (इन अर्थों की अन्य धातुएँ भी)। इनके साथ दो कर्म होते हैं—दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, ह, कृष्, वह्।**

Imp * for Paper

अभ्यास ७

१. उदाहरण-वाक्य—१. वह पढ़ेगा—सः पठिष्यति। २. तू जाएगा—त्वं गमिष्यसि। ३. मैं आऊँगा—अहम् आगमिष्यामि। ४. वह देखेगा—सः द्रक्ष्यति। ५. बकरी का दूध दुहता है—अजां दुग्धं दोग्धि। ६. राजा से क्षमा माँगता है—नृपं क्षमां याचते। ७. चावलों से भात पकाता है—तण्डुलान् ओदनं पचति। ८. राजा दुर्जन पर सौ रुपए दण्ड लगाता है—नृपः दुर्जनं शतं दण्डयति। ९. घर में बकरी को रोकता है—गृहम् अजां रुणद्धि। १०. गुरु से धर्म पूछता है—उपाध्यायं धर्मं पृच्छति। ११. लता से फूलों को चुनता है—लतां पुष्पाणि चिनोति। १२. पुत्र को धर्म बताता है—पुत्रं धर्मं ब्रवीति, शास्ति वा। १३. राम से सौ रुपए जीतता है—रामं शतं जयति। १४. समुद्र से अमृत को मथता है—सागरं सुधां मथ्नाति। १५. राम के सौ रुपए चुराता है—रामं शतं मुष्णाति। १६. बकरी को गाँव में ले जाता है—अजां ग्रामं नयति, हरति, कर्षति, वहति वा।

२. संस्कृत बनाओ—**(क)** १. वह लिखेगा। २. वह पढ़ेगा। ३. वह हँसेगा। ४. वह ऊपर जायेगा। ५. वह नीचे आयेगा। ६. रमेश रक्षा करेगा। ७. देवेन्द्र बोलेगा। ८. वह पकायेगा। **(ख)** ९. तू गिरेगा। १०. तू नमस्कार करेगा। ११. तू देखेगा। १२. तू बैठेगा (स्था,सद्)। १३. तू जल पियेगा। १४. तू फूल सूँघेगा। १५. तू ईश्वर को स्मरण करेगा। १६. तू राज्य जीतेगा। **(ग)** १७. मैं धन नहीं चुराऊँगा। १८. मैं सोचूँगा। १९. मैं कथा कहूँगा (कथ्)। २०. मैं खाना खाऊँगा (भक्ष्)। २१. मैं धन चाहूँगा। २२. मैं फूल छूऊँगा। २३. मैं प्रश्न पूछूँगा। २४. मैं यहाँ रहूँगा। **(घ)** २५. वह राजा से भूमि माँगता है। २६. वह चावलों से भात पकायेगा। २७. वह पुत्र से प्रश्न पूछेगा। २८. वह शिष्य को सत्य बतायेगा (वद्)। २९. रमेश दुर्जन से सौ रुपए जीतेगा। ३०. दिनेश नगर में बकरी को लायेगा। (नी, हृ, कृष्, वह्)।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) त्वं तिष्ठिष्यसि।	त्वं स्थास्यसि।	धातुरूप
(२) नृपात् वसुधां याचते।	नृपं वसुधां याचते।	२१
(३) नगरे अजां नेष्यति।	नगरम् अजां नेष्यति।	२१

४. अभ्यास—**(क)** २ (क) (ख) (ग) के एकवचन को बहुवचन बनाओ। **(ख)** पूरे रूप लिखो—रमा, अजा, वसुधा, सुधा, गङ्गा, यमुना। **(ग)** लृट् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, वद्, कृ, अस्, कथ्, भक्ष्, पच्, दृश्, स्था, पा, घ्रा, जि, प्रच्छ्, त्यज्, वस्, नी, वह्।

५. वाक्य बनाओ—पास्यामि, द्रक्ष्यामि, स्थास्यामि, स्प्रक्ष्यति, प्रक्ष्यति, वत्स्यति, घ्रास्यति, जेष्यति, याचते, पचति, ब्रवीति, नयति।

अभ्यास ८ (व्याकरण)

शब्दकोष—१७५+२५=२००)

(क) हरिः (विष्णु, सूर्य, किरण, सिंह, बन्दर), कविः (कवि), यतिः (संन्यासी), भूपतिः (राजा), सेनापतिः (सेनापति), प्रजापतिः (प्रजापति, ब्रह्मा), रविः (सूर्य), कपिः (बन्दर), मुनिः (मुनि), अग्निः (आग), गिरिः (पहाड़), मरीचिः (किरण)। मेघः (बादल), दण्डः (डंडा), कन्दुकः (गेंद)। (१५)। (ख) दह् (जलाना), ज्वल् (जलना), तप्(तपना, तपस्या करना), चर्(चलना, घूमना), वृष्(बरसना), गै(गाना)। (६)। (ग) सह, साकम्, सार्धम्, समम्, (चारों का अर्थ है, साथ) (४)।

सूचना—(क) हरि—मरीचि, हरिवत्। मेघ—कन्दुक, रामवत्। (ख) दह्—गै, भवतिवत्।

व्याकरण (हरि, लङ्; तृतीया)

१. शब्दरूप—'हरि' शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्दरूप सं० २)। संक्षिप्त रूप लगाकर कवि आदि के रूप बनाओ। सभी इकारान्त पुंलिंग शब्द हरिवत्। नियम १६ इन शब्दों में लगेगा—हरि, रवि, गिरि। जैसे—हरिणा, हरीणाम्।

* नियम २२—(पतिः समास एव) पति शब्द किसी शब्द के अन्त में समस्त होगा तो उसका रूप हरि के तुल्य चलेगा। जैसे—भूपतिना, भूपतये, भूपतेः आदि।

२. धातुरूप—'भू'—लङ्(भूतकाल)

				संक्षिप्तरूप—एक०	द्वि०	बहु०	
अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र० पु०	(धातु	अत्	अताम्	अन्	प्र० पु०
अभवः	अभवतम्	अभवत	म० पु०	से पहले	अः	अतम्	अत	म० पु०
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ० पु०	अ+)	अम्	आव	आम	उ० पु०

सूचना—लङ् में धातु से पहले 'अ' लगेगा, बाद में संक्षिप्तरूप। जैसे—अपठत्, अलिखत्, अदहत्, अज्वलत्, अतपत्, अचरत्, अवर्षत्, अगायत्। यदि धातु का प्रथम अक्षर स्वर होगा तो 'आ' लगेगा और वृद्धि होगी। जैसे—इष् > ऐच्छत्, आगम् > आगच्छत्, अस् > आसीत्।

कारक (तृतीया, करण)

* नियम २३— (साधकतमं करणम्) क्रिया की सिद्धि में सहायक को करण कहते हैं।

* नियम २४— (कर्तृकरणयोस्तृतीया) करण में तृतीया होती है और कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में कर्ता में तृतीया होती है। जैसे—कन्दुकेन क्रीडति। दण्डेन चलति। रामेण गृहं गम्यते। रामेण भूयते।

* नियम २५— (सहयुक्तेऽप्रधाने) सह, साकम्, सार्धम्, समम्, (साथ अर्थ में) के साथ तृतीया ही होती है। जैसे—जनकेन सह, साकं सार्धं समं वा गृहं गच्छति।

* नियम २६— (इत्थंभूतलक्षणे) जिस चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उसमें तृतीया होती है। जैसे—जटाभिः यतिः (जटा से संन्यासी ज्ञात होता है)।

* नियम २७— (हेतौ) कारणबोधक शब्दों में तृतीया होती है। अध्ययनेन वसति।

अभ्यास ८

१. उदाहरण-वाक्य—१. उसने पढ़ा—सः अपठत्। २. तूने लिखा—त्वम् अलिखः। ३. मैंने कहा—अहम् अवदम्। ४. भूपतिना सह सेनापतिः चरति। ५. यतिना सार्धं कविः गायति। ६. मुनिः सत्येन लोकं जयति। ७. रविः मरीचिभिः अतपत्। ८. अग्निः ग्रामम् अदहत्। ९. अग्निः ज्वलति। १०. गिरिं निकषा कपयः चरन्ति। ११. मेघः वर्षति। १२. प्रजापतिः (हरिः) लोकं करोति। १३. अध्ययनेन (अध्ययन के उद्देश्य से) वसति। १४. विद्यया ज्ञानं भवति। १५. धर्मेण हरिमपश्यत्।

२. संस्कृत बनाओ—१. राम गेंद से खेला। २. यति डण्डे के द्वारा चला। ३. कवि ने गाया। ४. आग ने नगर को जलाया। ५. सूर्य ने किरणों से लोक को तपाया। ६. आग कब जली? ७. संन्यासी ने वहाँ तप किया। ८. राजा कवि के साथ घूमा। ९. राजा (भूपति) के साथ सेनापति यहाँ आया। १०. जटा से संन्यासी ज्ञात होता है। ११. कवि ने किस प्रकार गाया? १२. यति मुनि के साथ हरि के पास गया। १३. पहाड़ के ऊपर-ऊपर सूर्य तपा। १४. राम बन्दरों के साथ खेला। १५. मुनि राजा के साथ बैठा। १६. मेघ बरसा। १७. कवि और मुनि ने पुस्तकें लिखीं। १८. राजा और सेनापति ने लोक की रक्षा की। १९. यति ने सूर्य को नमस्कार किया। २०. बन्दर बालकों के साथ खेला।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) कविना अगायत्।	कविः अगायत्।	१०
(२) अग्निना नगरम् अदहत्।	अग्निः नगरम् अदहत्।	१०
(३) भूपत्युः सह आगच्छत्।	भूपतिना सह आगच्छत्।	२२,२५
(४) यतिः मुनेः सह०।	यतिः मुनिना सह०।	२५
(५) ०सेनापतिना च लोकस्य अरक्षत्।	०सेनापतिः च लोकम् अरक्षताम्	१०,१३,१

४. अभ्यास—(**क**) २ के वाक्यों को लट्, लोट् और लृट् में परिवर्तित करो। (**ख**) पूरे रूप लिखो—हरि, कवि, रवि, अग्नि, मुनि, भूपति, प्रजापति। (**ग**) लङ् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, वद्, दृश्, स्था, पा, प्रच्छ्, दह्, ज्वल्, चर्।

५. वाक्य बनाओ—सह, साकम्, सार्धम्, समम्। अदहत्, अतपत्, अचरत्, अगायत्।

६. रिक्त स्थान भरो—(लङ् लकार) १. रामः कन्दुकेन (क्रीड्)। २. यतिः सूर्यम् (नम्)। ३. कविः कथम् (गै)। ४. गिरिं निकषा कपिः (भ्रम्)। ५. कपिभिः सह बालः (क्रीड्)।

अभ्यास ९

(व्याकरण)

शब्दकोष—२००+२५=२२५)

(क) गुरुः (गुरु, विशेषण-भारी, बड़ा), भानुः (सूर्य), इन्दुः (चन्द्रमा), शत्रुः (शत्रु), शिशुः (बालक), वायुः (वायु), पशुः (पशु), तरुः (वृक्ष), साधुः (सज्जन, सरल, अच्छा, निपुण)। काणः (काना), कर्णः (कान), बधिरः (बहरा), पादः (पैर), खञ्जः (लँगड़ा), शब्दः (शब्द), अर्थः (१. अर्थ, २. धन, ३. प्रयोजन), विवादः (विवाद)। नेत्रम् (आँख), तृणम् (तिनका), सुखम् (सुख), दुःखम् (दुःख), प्रयोजनम् (प्रयोजन), हसितम् (हँसना)। प्रकृतिः (स्वभाव)। (२४)। (ग) अलम् (१. बस, २. पर्याप्त, समर्थ, शक्त)। (१)

सूचना—(क) गुरु—साधु, गुरुवत्। काण—विवाद, रामवत्। नेत्र—हसित, गृहवत्। प्रकृति, मतिवत्।

व्याकरण (गुरु, विधिलिङ्, तृतीया, अनुस्वार सन्धि)

१. शब्दरूप—'गुरु' शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० ४)। संक्षिप्तरूप लगाकर भानु आदि के रूप गुरुवत् बनावें। सभी उकारान्त पुंलिंग शब्द गुरु के तुल्य चलेंगे। नियम १६ इन शब्दों में लगेगा—गुरु, शत्रु, तरु। जैसे—गुरुणा, गुरूणाम्, शत्रुणा, शत्रूणाम्।

२. धातुरूप—'भू'—विधिलिङ्(आज्ञा/चाहिए अर्थ) संक्षिप्तरूप—एक० द्वि० बहु०

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र० पु०	एत्	एताम्	एयुः	प्र० पु०
भवेः	भवेतम्	भवेत	म० पु०	एः	एतम्	एत	म० पु०
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ० पु०	एयम्	एव	एम	उ० पु०

संक्षिप्त रूप लगाकर पठ् आदि के रूप बनावें। जैसे—पठेत्, लिखेत्, गच्छेत्, पश्येत्।

कारक (तृतीया, अनुस्वार सन्धि)

* नियम २८— किम्, कार्यम्, अर्थः और प्रयोजनम् (चारों प्रयोजन अर्थ में हों तो) के साथ तृतीया होती है—जैसे—मूर्खेण पुत्रेण किम्, किं कार्यम्, कोऽर्थः, किं प्रयोजनम्? (मूर्ख पुत्र से क्या लाभ या क्या प्रयोजन)। तृणेन अपि कार्यं भवति।

* नियम २९— अलम् (बस, मत) के साथ तृतीया होती है। जैसे—अलं हसितेन (मत हँसो)। अलं विवादेन (विवाद मत करो)।

नियम ३०— (येनाङ्गविकारः) शरीर का जो अंग विकार से विकृत दिखाई पड़े, उसमें तृतीया होती है। जैसे—नेत्रेण काणः (एक आँख से काणा), कर्णेन बधिरः।

* नियम ३१— (प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्) प्रकृति (स्वभाव) आदि क्रिया-विशेषण शब्दों में तृतीया होती है। प्रकृत्या साधुः (स्वभाव से सरल)। सुखेन जीवति। दुःखेन जीवति। सरलतया लिखति।

* नियम ३२— (सन्धि)—(मोऽनुस्वारः) पदान्त (शब्द या धातुरूप के अन्तिम) म् के बाद कोई हल् (व्यंजन) हो तो म् को अनुसार (ं) हो जाता है, स्वर बाद में हो तो नहीं। रामम्+पश्यति=रामं पश्यति। रामम्+अपश्यत्= राममपश्यत्।

अभ्यास ९

१. उदाहरण-वाक्य—१. उसे पढ़ना चाहिए (वह पढ़े)—सः पठेत्। २. तुझे लिखना चाहिए—त्वं लिखेः। ३. मैं गुरु को नमस्कार करूँ—अहं गुरुं नमेयम्। ४. दुर्जनेन कोऽर्थः, किं प्रयोजनम्, किं कार्यम्? (दुर्जन से क्या लाभ?)। ५. अलं भोजनेन (भोजन मत करो)। ६. पादेन खञ्जः। ७. गुरुः शिशुं प्रश्नं पृच्छेत्। ८. सूर्यः मरीचिभिः तपेत्। ९. इन्दुः सुधां वर्षेत्। १०. भूपतिः शत्रून् जयेत्। ११. साधुः पशुभिः सह चरेत्। १२. तरुः फलैः नमेत्। १३. सज्जनाः विद्यया सह नमेयुः। १४. प्रकृत्या साधुः।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. दुर्जन शिष्य से क्या लाभ? २. मत हँसो। ३. मत खाओ। ४. शत्रु आँख से काना है। ५. शिशु कान का बहरा है। ६. पशु पैर से लँगड़ा है। ७. गुरु स्वभाव से सज्जन है। ८. वायु सुख से बहती है। **(ख)** (विधिलिङ्) ९. शिशु गुरु को नमस्कार करे। १०. तू सूर्य को देख। ११. मैं चन्द्रमा को देखूँ। १२. वे शत्रुओं को जीतें। १३. हवा बहे (वह्)। १४. शिशु पशुओं के साथ पहाड़ पर जाये। १५. साधु वृक्षों के पास बसे। १६. तू घर जा। १७. मैं वृक्षों को देखूँ। १८. हम सूर्य को देखें। १९. कृष्ण चावल पकाये। २०. शिशु दूध पिये।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अलं हसितस्य।	अलं हसितेन।	२९
(२) नेत्रस्य काणः।	नेत्रेण काणः।	३०
(३) सुखात् वहति।	सुखेन वहति।	३१
(४) गिरौ गच्छेत्।	गिरिं गच्छेत्।	१५
(५) दुग्धम् पिबेत्।	दुग्धं पिबेत्।	३२

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को लट्, लोट् और लृट् में बदलो। **(ख)** पूरे रूप लिखो—गुरु, भानु, इन्दु, शिशु, शत्रु, वायु, साधु। **(ग)** विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, वद्, दृश्, स्था, पा, प्रच्छ्, चर्, त्यज्, खाद्, धाव्।

५. वाक्य बनाओ—कोऽर्थः, किं प्रयोजनम्, अलम्, प्रकृत्या, काणः, खञ्जः। पठेत्, लिखेत्, गच्छेः, वदेः, पश्येत्, तिष्ठेत्, पिबेत्, पृच्छेत्, त्यजेयम्, खादेम।

६. रिक्त स्थलों को भरो—१. अलं ·····। २. प्रकृत्या ·····। ३. ····· बधिरः। ४. ····· कोऽर्थः। ५. ····· पश्येत्। ६. ····· पठेम। ७. ····· गच्छेम। ८. ····· नमेयम्।

७. संधि करो—किम्+कार्यम्+करोति। अहम्+गृहम्+गच्छामि। पुस्तकम्+पठति। गुरुम्+नमति। शिशुम्+प्रश्नम्+पृच्छति। जलम्+पिबति। त्वम्+पठसि। अहम्+लिखामि।

शब्दकोष—२२५+२५=२५०)

अभ्यास १०

(व्याकरण)

(क) तत् (वह), यत् (जो), एतत् (यह), किम् (कौन), सर्व (सब), पूर्व (पहला), विश्व (१. सब, २. संसार), अन्य (और), इतर (और), (सर्वनाम)। विप्रः (ब्राह्मण), इन्द्रः (इन्द्र), दैत्यः (राक्षस)। प्रभुः (१. स्वामी, २. समर्थ), पितृ (१. पिता, २. पितरलोग)। (१४)। (ख) दा (यच्छ्) (देना), वितृ (देना), दा (देना)। (३)। (ग) नमः (नमस्कार, प्रणाम), स्वस्ति (आशीर्वाद), स्वाहा (देवताओं के लिए अग्नि में आहुति), स्वधा (पितरों के लिए अन्नादि), अलम् (पर्याप्त, समर्थ), वषट् (आहुति, साधुवाद)। (६)। (घ) शक्तः (समर्थ), समर्थः (समर्थ)। (२)।

सूचना—(क) तत्—इतर्, सर्ववत्। (ख) दा—वित्, भवतिवत्।

व्याकरण (सर्वनाम पुंलिंग, चतुर्थी, यण्सन्धि)

१. सर्व शब्द के रूप पुंलिंग में स्मरण करो। (देखो शब्द सं० २९ क)। नियम १६ इन शब्दों में लगेगा—सर्व, पूर्व, विप्र, इन्द्र, प्रभु, पितृ।

सूचना—(क) अकारान्त सर्वनाम शब्दों में 'राम' शब्द के रूप से ये ५ अन्तर होते हैं। १. प्र० बहु० में 'ए'। २. च० एक० में 'स्मै'। ३. पं० एक० में 'स्मात्'। ४. ष० बहु० में 'एषाम्'। ५. स० एक० में 'स्मिन्' लगेगा। शेष रामवत्। (ख) तत्, यत्, एतत्, किम् को पुंलिंग में क्रमशः त, य, एत, क रूप हो जाता है, इनके ही रूप चलते हैं। केवल तत् और एतत् का प्र० एक० में क्रमशः सः, एषः हो जाता है। जैसे—तत् > सः तौ ते।

२. धातुरूप—लट् में यच्छ् > यच्छति। वित् > वितरति। दा > ददाति।

* नियम ३३— सर्वनाम शब्दों और विशेषण शब्दों का वही लिंग, विभक्ति और वचन होता है, जो विशेष्य का होता है। जैसे—कः नरः, कं नरम्, केन नरेण। का बाला।

* नियम ३४— (कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम्) दान आदि क्रिया जिसके लिए की जाती है, उसे संप्रदान कहते हैं।

* नियम ३५— (चतुर्थी संप्रदाने) संप्रदान कारक में चतुर्थी होती है। विप्राय धनं ददाति।

* नियम ३६— (नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् (तथा पर्याप्त अर्थवाले अन्य शब्द), वषट् के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—गुरवे नमः। शिष्याय स्वस्ति। अग्नये स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा। इन्द्राय वषट्। हरिः दैत्येभ्यः अलम्, प्रभुः, समर्थः, शक्तः वा।

* नियम ३७— (संधि) (इको यणचि) इ, ई को य्; उ, ऊ को व्; ऋ, ॠ को र्; ऌ को ल् हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वर हो तो। सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नहीं। जैसे—प्रति+एकः=प्रत्येकः, इ को य्। पठतु+एकः=पठत्वेकः, उ को व्। पितृ+आ=पित्रा, ऋ को र्। ऌ+आकृतिः=लाकृतिः, ऌ को ल।

अभ्यास १०

१. उदाहरण-वाक्य—१. वह उस ब्राह्मण को धन देता है—स तस्मै विप्राय धनं ददाति, यच्छति, वितरति वा। २. गुरु को नमस्कार—गुरवे नमः। ३. पुत्राय स्वस्ति। ४. राम शत्रुओं के लिए पर्याप्त है—रामः शत्रुभ्यः अलम्, समर्थः, शक्तः, प्रभुः वा। ५. एतस्मै बालकाय फलं यच्छ, वितर वा। ६. कस्मै शिष्याय ज्ञानं वितरसि। ७. सर्वेभ्यः (विश्वेभ्यः) शिशुभ्यः भोजनं वितर, इतरेभ्यः (अन्येभ्यः) फलानि यच्छ। ८. तिष्ठत्यत्र कः? ९. लिखत्येकः, पठत्वन्यः। १०. आगच्छत्विह रामः।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. उस बालक को दूध दो (यच्छ्, वित्)। २. इस मुनि को धन दो। ३. सूर्य को जल दो। ४. किस राजा को धन देते हो? ५. उस कवि को भोजन दो। ६. जिस बालक को फल देते हो, उसी को फूल भी दो। ७. पिता को नमस्कार। ८. शिष्य को आशीर्वाद। ९. दुर्जन के लिए राजा पर्याप्त है। १०. ज्ञान के लिए गुरु के पास जाओ। ११. अग्नि के लिए स्वाहा। १२. पितरों के लिए स्वधा। **(ख)** १३. इन मुनियों को फल और फूल दो। १४. जो बालक विद्यालय नहीं जाता, उसको पिता दण्ड देता है। १५. इन फलों के लिए उन वृक्षों को देखो। १६. इस प्रश्न को उस छात्र से पूछो। १७. सारे (सर्व, विश्व) विद्वानों को वहाँ ले जाओ। १८. किस बालक को पूछते हो? १९. किस विद्यालय में पढ़ते हो? २०. इन छात्रों को पुस्तक दो और उन बालिकाओं को गेंद दो।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) तं बालकं दुग्धं वितर।	तस्मै बालकाय दुग्धं वितर।	३३, ३५
(२) एतं मुनिं धनं यच्छ।	एतस्मै मुनये धनं यच्छ।	३३, ३५
(३) जनकं नमः।	जनकाय नमः।	३६
(४) एतं प्रश्नं तस्मात् छात्रात् पृच्छ।	एतं प्रश्नं तं छात्रं पृच्छ।	२१, ३३

४. अभ्यास—(क) २ (क) को बहुवचन में परिवर्तित करो। **(ख)** तत्, यत्, एतत्, किम्, सर्व और विश्व के पुंलिंग में पूरे रूप लिखो। **(ग)** यच्छ्, वितृ के लट्, लोट् और विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ—नमः, स्वस्ति, अलम्, प्रभुः, कस्मै, तस्मै, एतस्मै, यस्मै, सर्वेभ्यः।

६. संधि करो—प्रति + एकः। इति + उवाच। इति + आह। इति + अवदत्। आगच्छतु + अत्र। पठतु + एषः। सुधी + उपास्यः। मधु + अरिः। धातृ + अंशः। लृ + आकृतिः।

७. संधि-विच्छेद करो—यद्यपि, प्रत्युपकारः, इत्येतत्, इत्युवाच, पठत्वत्र, गच्छत्वन्यः।

अभ्यास ११

शब्दकोष—२५०+२५=२७५)

(क) ब्राह्मणः (ब्राह्मण), क्षत्रियः (क्षत्रिय), वैश्यः (वैश्य), शूद्रः (शूद्र), वर्णः (वर्ण), मोक्षः (मोक्ष, मुक्ति), मूर्खः (मूर्ख), चोरः (चोर), अश्वः (घोड़ा)। मोदकम् (लड्डू), पापम् (पाप)। (११)। (ख) क्रुध् (क्रोध करना), कुप् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय (बुराई निकालना), धारि (धारण करना, किसी का ऋणी होना), स्पृह् (चाहना), निवेदि (कहना, निवेदन करना), उपदिश् (उपदेश देना), भज् (सेवा या भजन करना), क्रन्द् (रोना)। रुच् (१. अच्छा लगना, २. चमकना)। (१२)। (ग) अर्थम् (लिए), कृते (लिए) (२)।

सूचना—(क) ब्राह्मण—अश्व, रामवत्। मोदक—पाप, गृहवत्।

व्याकरण (सर्वनाम नपुं०, चतुर्थी, अयादि सन्धि)

१. शब्दरूप—सर्व के नपुं० के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० २९ ख)। संक्षिप्त रूप लगाकर तत् आदि (अभ्यास १०) के पूरे रूप बनाओ।

सूचना—सर्व आदि के तृतीया से सप्तमी तक पुंलिंग के तुल्य रूप होंगे। प्र०, द्वि० में अम्, ए आनि लगेगा। तत् आदि के प्र० द्वि० एक० में ये रूप होते हैं—तत्, यत्, एतत्, किम्, अन्यत्, इतरत्।

२. धातुरूप—क्रुध् आदि के ये रूप बनाकर लट् आदि में 'भवति' के तुल्य रूप चलेंगे। क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति, धारयति, स्पृहयति, निवेदयति, उपदिशति, भजति, क्रन्दति। रुच् का लट् प्र० पु० एक० में रोचते। (देखो अभ्यास १६)।

* नियम ३८— (रुच्यर्थानां प्रीयमाणः) रुच् (अच्छा लगना) अर्थ की धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—बालकाय मोदकं रोचते। पुत्राय दुग्धं रोचते।

* नियम ३९— (क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः) क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय अर्थ की धातुओं के साथ जिस पर क्रोध किया जाय, उसमें चतुर्थी होती है। रामः मूर्खाय (राम मूर्ख पर) क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति।

* नियम ४०— कथ्, निवेदय, उपदिश्, धारय (ऋणी होना), स्पृह्, कल्पते (होना), संपद्यते (होना), हितम् (हित) तथा सुखम् के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—शिष्याय (शिष्य को) कथयति। रामः देवदत्ताय शतं (राम देवदत्त का सौ रु०) धारयति। विद्या ज्ञानाय कल्पते, संपद्यते। उपदिश् के साथ द्वितीया भी होती है।

* नियम ४१— (तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या) जिस प्रयोजन के लिए जो वस्तु या क्रिया होती है, उसमें चतुर्थी होती है। जैसे—मोक्षाय हरिं भजति। शिशुः दुग्धाय क्रन्दति।

* नियम ४२— चतुर्थी के अर्थ में 'अर्थम्' और 'कृते' अव्ययों का प्रयोग होता है। कृते के साथ षष्ठी होती है। भोजनार्थम्, भोजनस्य कृते (खाने के लिए)।

* नियम ४३— (संधि) (एचोऽयवायावः) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय् और औ को आव् हो जाता है, बाद में कोई स्वर हो तो। जैसे—ने+अनम्=नयनम्। हरे+ए=हरये। गुरो+ए=गुरवे। गै+अकः=गायकः। द्यौ+अत्र=द्यावत्र।

अभ्यास ११

१. उदाहरण-वाक्य—१. बालक को लड्डू अच्छा लगता है—बालकाय मोदकं रोचते। २. नृपः दुर्जनेभ्यः (राजा दुर्जनों पर) क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति वा। ३. गुरुः शिष्याय (शिष्य को) कथयति, निवेदयति, उपदिशति वा। ४. हरिः पुष्पेभ्यः (फूलों को) स्पृहयति। ५. विद्या अर्थाय कल्पते, संपद्यते, भवति (धन के लिए है)। ६. ब्राह्मणाय (ब्राह्मण का) हितं सुखं वा भवेत्। ७. शिशुः दुग्धाय (दुग्धार्थम्, दुग्धस्य कृते) क्रन्दति। ८. तत् पुस्तकं पठ। ९. एतत् राज्यं रक्ष। १०. किं कार्यं करोषि। ११. सर्वाणि पुस्तकानि शिष्येभ्यः सन्ति। १२. अन्यत् (इतरत्) पुस्तकं पठ। १३. छात्रावत्र आगच्छतः। १४. बालकावत्र क्रीडतः।

२. संस्कृत बनाओ—१. उस छात्र को यह फूल अच्छा लगता है। २. इस बालक को यह पुस्तक अच्छी लगती है। ३. गुरु शिष्य पर क्रोध करता है। ४. यह दुर्जन उस सज्जन से द्रोह करता है। ५. वह मूर्ख इस विद्वान् से ईर्ष्या करता है (ईर्ष्य, असूय)। ६. वह गुरु इन बालकों को उपदेश देता है। ७. राजा ने सेनापति से कहा। ८. शिष्य गुरु से भोजन के लिए (अर्थम्, कृते) निवेदन करता है। ९. वह मुनि मोक्ष के लिए ईश्वर को भजता है। १०. चार वर्ण हैं, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ११. वह गुरु इन शिष्यों को विद्या देता है। १२. राम इन फलों को चाहता है (स्पृह्)। १३. सारे पापों को छोड़ो। १४. ये क्षत्रिय उन वैश्यों और शूद्रों की रक्षा करें। १५. यह दूसरी (अन्य, इतर) पुस्तक है। १६. वह मनुष्य कृष्ण का सौ रु० का ऋणी है। १७. शिष्य का हित हो (हितम्, सुखम्)।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) बालकं पुस्तकं रोचते।	बालकाय पुस्तकं रोचते।	३८
(२) शिष्ये क्रुध्यति।	शिष्याय क्रुध्यति।	३९
(३) सेनापतिम् अकथयत्।	सेनापतये अकथयत्।	४०

४. अभ्यास—**(क)** यत्, तत्, एतत्, किम्, सर्व और विश्व के नपुं० के पूरे रूप लिखो। **(ख)** इनके लट् लोट् और विधिलिङ् के रूप लिखो—क्रुध्, उपदिश्, भज्, निवेदय, धारय।

५. वाक्य बनाओ—रोचते, क्रुध्यति, द्रुह्यति, धारयति, स्पृहयति, कथयति, भजति, अर्थम्।

६. संधि करो—मुने+ए, कवे+ए, जे+अति, जे+अः, शे+अनम्, गुरो+ए, पो+अनः, भो+अति, नै+अकः, कै+अः, पौ+अकः, प्रभौ+अः, भौ+अकः।

७. संधि-विच्छेद करो—सज्जनावत्र, बालावद्य, ब्राह्मणाविदानीम्, द्वावेतौ, भावकः, परिचायकः, यतये, कवये, शिशवे, साधवे, गुरवे।

शब्दकोष—२७५+२५=३००) **अभ्यास १२** (व्याकरण)

(क) वृक्षः (वृक्ष), प्रासादः (महल)। शैशवम् (बाल्यकाल), उपवनम् (वाटिका)। प्रजा (प्रजा), वेला (समय)। (६)। (ख) भी (डरना), त्रै (रक्षा करना), अधि+इ (पढ़ना), आ+नी (लाना)। (४) (ग) ऋते (बिना), आरात् (१. समीप, २. दूर), प्रभृति (उक्त समय से लेकर), आरभ्य (आरम्भ करके); बहिः (बाहर), प्राक् (१. पूर्व की ओर, २. पहले), प्रत्यक् (पश्चिम की ओर), उदक् (उत्तर की ओर), दक्षिणा (दक्षिण की ओर)। (९)। (घ) पूर्वः (१. पूर्व दिशा, २. पहले), पश्चिमः (पश्चिम दिशा), उत्तरः (उत्तर दिशा), दक्षिणः (१. दक्षिण दिशा, २. चतुर), भिन्नः (अतिरिक्त, अलावा), अतिरिक्तः (भिन्न)। (६)।

सूचना—(क) वृक्ष—प्रासाद, रामवत्। शैशव—उपवन, गृहवत्। प्रजा—वेला, रमावत्।

व्याकरण (सर्वनाम स्त्रीलिंग, पंचमी, गुणसन्धि)

१. सर्व शब्द के स्त्रीलिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० २९ ग)। संक्षिप्तरूप लगाकर विश्व आदि (अभ्यास १०) के रूप बनाओ।

सूचना—सर्व आदि के स्त्रीलिंग में रमा शब्द से ५ स्थानों पर अन्तर होंगे। १. च० एक० अस्यै। २. ३. पं० और ष० एक० अस्याः। ४. ष० बहु० आसाम्। ५. स० एक० अस्याम्। तत् आदि का प्रथमा एक० में सा, या, एषा और का होता है। आगे ता, या, एता, का के रूप रमावत् चलावें।

२. भी आदि के लट् में क्रमशः ये रूप होंगे—बिभेति, त्रायते (सेवतेवत्), अधीते, आनयति (भवतिवत्)।

☞ **नियम ४४**— (ध्रुवमपायेऽपादानम्) जिससे कोई वस्तु आदि अलग हो, उसे अपादान कहते हैं।

* **नियम ४५**— (अपादाने पंचमी) अपादान में पंचमी होती है। जैसे—वृक्षात् पत्रं पतति।

* **नियम ४६**— (अन्यारादितरर्ते०) अन्य, आरात्, इतर (तथा अन्य अर्थ वाले और भी शब्द) ऋते, पूर्व आदि दिशावाची शब्द (इनका देश, काल अर्थ हो तो भी), प्रभृति और बहिः, इन शब्दों के साथ पंचमी होती है। जैसे—ज्ञानाद् ऋते न मोक्षः। ग्रामात् पूर्वः पश्चिमः उत्तरः दक्षिणः प्राक् आदि (गाँव से पूर्व आदि की ओर)। शैशवात् प्रभृति (बचपन से लेकर)। ग्रामाद् बहिः।

* **नियम ४७**— (भीत्रार्थानां भयहेतुः) भय और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ भय के कारण में पंचमी होती है। चोराद बिभेति। चोरात् त्रायते।

* **नियम ४८**—(आख्यातोपयोगे) जिससे विद्या आदि पढ़ी जाए, उसमें पंचमी होती है। उपाध्यायादधीते। गुरोः पठति।

* **नियम ४९**— (अदेङ्गुणः) अ, ए और ओ को गुण कहते हैं।

* **नियम ५०**— (संधि) (आद्गुणः) अ या आ के बाद इ या ई को ए, उ या ऊ को ओ, ऋ या ॠ को अर्, ऌ को अल् होता है। जैसे—रमा+ईशः = रमेशः, पर+उपकारः = परोपकारः, महा+ऋषिः = महर्षिः, तव+ऌकारः = तवल्कारः।

अभ्यास १२

१. उदाहरण-वाक्य—१. इस वृक्ष से यह पत्ता गिरा—अस्माद् वृक्षात् एतत् पत्रम् अपतत्। २. तस्माद् अश्वात् स नरः पतति। ३. प्रासादाद् बालः अपतत्। ४. तस्माद् गुरोः अधीते, पठति वा। ५. चोराद् बिभेति। ६. चोरात् त्रायते। ७. रामाद् अन्यः (इतरः, भिन्नः, अतिरिक्तः) कः सत्यं वदेत्। ८. धनाद् ऋते न सुखम्। ९. एषा बालिकेच्छति लतामेताम्। १०. एताः सर्वाः (विश्वाः) प्रजाः धर्मं रक्षन्ति। ११. प्रजेच्छति नृपम्। १२. पश्येदानीम्। १३. नेदानीं गच्छ। १४. पश्योपरि। १५. केदानीं वेला?

२. संस्कृत बनाओ—१. उस वृक्ष से ये फूल गिरे। २. उस महल से वह लड़की गिरी। ३. किस घोड़े से वह सेनापति गिरा? ४. जिस नगर से वह राजा इस गाँव में आया, उसी नगर को अब गया है। ५. उस पाठशाला से वह लड़की यहाँ आयी। ६. उस गुरु से वह शिष्य पढ़ता है (अधि+इ)। ७. उसने गुरु से पढ़ा। ८. यह लड़की चोर से डरती है। ९. वह ब्राह्मण इस कन्या को उस राक्षस से बचाता है। १०. प्रजा से राजा के लिए धन लाओ। ११. क्षत्रिय के अतिरिक्त (अन्यः, इतरः, भिन्नः, अतिरिक्तः) कौन इस प्रजा को दुःख से बचाता है? १२. धर्म के बिना (ऋते) सुख नहीं। १३. गाँव के पास (आरात्) सारी सेना है। १४. गाँव के पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर कौन लोग रहते हैं? १५. मैं बाल्यकाल से लेकर यहाँ ही रहता हूँ। १६. गाँव के बाहर जाओ। १७. अब क्या समय है? १८. वाटिका से फूल लाओ। १९. पेड़ से फल गिरे। २०. उस गुरु से विद्या पढ़ो।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) इदं वृक्षात् एते फलानि०।	एतस्माद् वृक्षाद् एतानि फलानि०।	३३
(२) तं नगरम् अगच्छत्।	तद् नगरम् अगच्छत्।	३३
(३) तेन गुरुणा अधीते।	तस्माद् गुरोः अधीते।	४८
(४) चोरेण बिभेति।	चोराद् बिभेति।	४७
(५) ग्रामस्य पूर्वः, प्राक्०।	ग्रामात् पूर्वः, प्राक्०।	४६

४. अभ्यास—यत्, तत्, एतत्, किम्, सर्व, पूर्व के स्त्रीलिंग के पूरे रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ—बिभेति, त्रायते, अधीते, आनयति, ऋते, आरात्, प्रभृति, बहिः, पूर्वः, भिन्नः।

६. संधि करो—का + इदानीम्। एषा + इच्छति। न +इच्छति। न + इदम्। पर + उपकारः। महा + उदयः। वीर + इन्द्रः। महा + ऋषिः। राजा + ऋषिः। पश्य + उपरि। महा + उत्सवः।

७. संधि-विच्छेद करो—नेच्छति, गच्छोपरि, ब्रह्मर्षिः, सप्तर्षिः, केह, तस्योपरि, सूर्योदयः।

अभ्यास १३ (व्याकरण)

शब्दकोष—३००+२५=३२५)

(क) इदम् (यह), अदस् (वह) (सर्वनाम)। अङ्कुरः (अंकुर), तिलः (तिल), माषः (उड़द), यवः (जौ)। बीजम् (बीज)। दूरम् (दूर)। अन्तिकम्, समीपम्, निकटम्, पार्श्वम्, सकाशम् (इन ५ का अर्थ है, समीप)। (१३)। (ख) विरम् (रुकना), प्रमद् (प्रमाद करना), निवृ (हटाना), प्रभू (१. उत्पन्न होना, २. समर्थ होना), उद्भू (निकलना), प्रति + दा (बदले में देना)। जुगुप्स (घृणा करना), जन् (उत्पन्न होना), निली (छिपना)। (९)। (ग) पृथक् (अलग) (१)। (घ) पटुः (पटुतरः) (१. चतुर, २. उससे चतुर), गुरुः (गुरुतरः) (१. भारी या श्रेष्ठ, २. उससे भारी या अच्छा)। (२)।

सूचना—(क) अङ्कुर—यव, रामवत्। बीज, गृहवत्।

व्याकरण (इदम्, अदस् (पुं०), पञ्चमी, वृद्धिसंधि)

१. शब्दरूप—इदम्, अदस् के पुंलिंग के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० ३७ क, ३८ क। संक्षिप्तरूप लगाकर तत् आदि (अभ्यास १०) के पूरे रूप बनाओ।

२. धातुरूप—'विरम्' आदि धातुओं के लट् (प्र० १) में क्रमशः ये रूप होते हैं—विरमति, प्रमाद्यति, निवारयति, प्रभवति, उद्भवति, प्रतियच्छति (उक्त रूप बनाकर भवतिवत्)। जुगुप्सते, जायते, निलीयते (उक्त रूप बनाकर सेवतेवत्, देखो अभ्यास १६)।

* नियम ५१— (जुगुप्साविराम०) जुगुप्सते, विरमति, प्रमाद्यति के साथ पंचमी होती है। पापात् जुगुप्सते, विरमति। धर्मात् प्रमाद्यति।
* नियम ५२— (वारणार्थानामीप्सितः) जिस वस्तु से किसी को हटाया जाय, उसमें पंचमी होती है। यवेभ्यः पशुं वारयति। पुत्रं पापाद् वारयति, निवारयति वा।
* नियम ५३— जायते, उद्भवति, प्रभवति, उद्गच्छति (इन चारों का उत्पन्न होना या निकलना अर्थ हो तो), निलीयते और प्रतियच्छति के साथ पंचमी होती है। प्रजापतेः लोकः जायते। हिमालयाद् गङ्गा प्रभवति, उद्भवति वा। नृपात् चोरः निलीयते। तिलेभ्यः माषान् प्रतियच्छति।
* नियम ५४— (पञ्चमी विभक्ते) तुलना में जिससे तुलना की जाती है, उसमें पंचमी होती है। रामात् कृष्णः पटुतरः। धनात् ज्ञानं गुरुतरम्।
* नियम ५५—(पृथग्विना०) पृथक् और विना के साथ पंचमी, द्वितीया और तृतीया तीनों होती हैं। रामात्, रामेण, रामं विना पृथक् वा।
* नियम ५६— (दूरान्तिकार्थैर्योग०) दूर और निकटवाची शब्दों में पंचमी, द्वितीया और तृतीया तीनों होती हैं। ग्रामस्य दूरात्, दूरेण, दूरम्।
* नियम ५७— (वृद्धिरादैच्) आ, ऐ और औ को वृद्धि कहते हैं।
* नियम ५८— (वृद्धिरेचि) अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो 'ऐ', ओ या औ हो तो 'औ' होता है। तदा + एकः = तदैकः। तस्य + ऐश्वर्यम् = तस्यैश्वर्यम्। तण्डुल + ओदनम् = तण्डुलौदनम्। महा + ओषधिः = महौषधिः।

अभ्यास १३

१. उदाहरण-वाक्य—१. यह बालक पाप से घृणा करता है—अयं बालकः पापाद् जुगुप्सते, विरमति वा। २. स यवेभ्यः इमान् पशून् निवारयति। ३. अमुं पुत्रं पापाद् निवारय। ४. स एभ्यः तिलेभ्यः माषान् प्रतियच्छति। ५. अमुष्माद् बालकाद् अयं बालकः पटुतरः। ६. विद्यायाः (विद्यां विद्यया) विना न ज्ञानम्। ७. अस्माद् ग्रामात् पृथक् वस। ८. जनकस्य समीपात् (अन्तिकात्, पार्श्वात्, निकटात्, सकाशात्) आगच्छामि। ९. बालिकैषा आगच्छति। १०. तदैकः नरः आगच्छत्। ११. पश्यैतां लताम्। १२. निवारयैतस्मात् पापात् पुत्रम्।

२. संस्कृत बनाओ—(इदम्, अदस् का प्रयोग करो) १. यह बालक धर्म से प्रमाद करता है। २. वह शिष्य इस पाप से रुकता (बचता) है। ३. मेरा पुत्र पाप से घृणा करता है। ४. यह गुरु उस शिष्य को इस पाप से हटाता है। ५. जौ से इन पशुओं को हटाओ (निकालो)। ६. ईश्वर से यह लोक उत्पन्न होता है। ७. गंगा हिमालय से निकलती है। ८. बीजों से अंकुर उत्पन्न होते हैं। ९. वह देवदत्त पिता से छिपता है। १०. वह वैश्य इन चावलों से उड़द को बदलता है। ११. उस यति से यह कवि अधिक कुशल है। १२. धन से ज्ञान अधिक बड़ा है। १३. इस कवि के बिना कौन कथा कहेगा? १४. उस गुरु के पास से इस ग्राम में आया हूँ। १५. गाँव से दूर वह विद्यालय है। १६. उस गुरु से विद्या पढ़ता है।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) अनेन पापेन निवारयति।	अस्मात् पापाद् निवारयति।	५२
(२) एभिः तण्डुलैः... प्रतियच्छति।	एभ्यः तण्डुलेभ्यः०।	५३
(३) धनेन ज्ञानं गुरुतरः।	धनात् ज्ञानं गुरुतरम्।	५४, ३३
(४) अस्मिन् ग्रामे आगच्छम्।	इमं ग्रामम् आगच्छम्।	१५

४. अभ्यास—**(क)** इदम् और अदस् के पुंलिंग के पूरे रूप लिखो। **(ख)** पंचमी किन-किन स्थानों पर होती है, उदाहरण सहित बताओ।

५. वाक्य बनाओ—जुगुप्सते, विरमति, प्रमाद्यति, जायते, उद्भवति, प्रभवति, प्रतियच्छति, निलीयते, पटुतरः, गुरुतरः, पृथक्, विना, दूरात्, अन्तिकात्।

६. संधि करो—विद्या + एषा। पश्य + एतम्। देव + ऐश्वर्यम्। यदा + एकः। कदा + एकेन। तस्य + एव। सर्वदा + एव। अत्र + एकः। सा + एव। महा + औषधम्। महा + ओषधिः। सदा + एषा। न + एषः। का + एषा। अद्य + एव। अथ + एकः।

७. संधि-विच्छेद करो—पश्यैताम्। आनयैतस्याः। निवारयैतस्मात्। सैषा। नैतत्। नैव।

शब्दकोष—३२५+२५=३५०) **अभ्यास १४** (व्याकरण)

(क) छात्रः (विद्यार्थी)। अन्नम् (अन्न)। निमित्तम् (कारण), कारणम् (कारण), हेतुः (कारण)। (५)। (ख) निन्द् (निन्दा करना), अर्च् (पूजा करना), शुच् (शोक करना), जप् (जप करना), आलप् (बात करना), आह्वे (बुलाना), तॄ (तैरना), ध्यै (ध्यान करना), अभिलष् (चाहना), जीव् (जीना), खन् (खोदना)। (११)। (ग) उत्तरतः (उत्तर की ओर), दक्षिणतः (१. दक्षिण की ओर, २. दाहिनी ओर), पुरः (सामने), पुरस्तात् (सामने), उपरिष्टात् (ऊपर की ओर), अधस्तात् (नीचे की ओर), पश्चात् (पीछे), अग्रे (आगे)। (८)। (घ) श्रेष्ठः (श्रेष्ठ), [पटुतमः (सबसे अधिक चतुर)] (१)।

सूचना—(क) छात्र, रामवत्। अन्न, गृहवत्। (ख) निन्द्—खन् भवतिवत्।

व्याकरण (इदम्, अदस् (नपुं०), षष्ठी, पूर्वरूपसन्धि)

१. इदम्, अदस् के नुपंसकलिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३७ ख, ३८ ख)।

२. संक्षिप्त रूप लगाकर निन्द् आदि के भवतिवत् दसों लकारों में रूप चलाओ। जैसे—निन्दति, शोचति, आह्वयति, तरति, ध्यायति, अभिलषति, जीवति, खनति।

सूचना—षष्ठी दो या अधिक शब्दों का केवल सम्बन्ध बताती है, उसका क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध नहीं है। अतः संस्कृत में षष्ठी को कारक नहीं मानते हैं।

* **नियम ५९**— (षष्ठी शेषे) सम्बन्ध का बोध कराने के लिए षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—गङ्गायाः जलम्। रामस्य पुस्तकम्। देवदत्तस्य धनम्। रामायणस्य कथा।

* **नियम ६०**— (षष्ठी हेतुप्रयोगे) हेतु शब्द के साथ षष्ठी होती है। अन्नस्य हेतोः वसति।

* **नियम ६१**— (निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्) निमित्त अर्थवाले शब्दों (निमित्त, कारण, हेतु, प्रयोजन) के साथ प्रायः सभी विभक्तियाँ होती हैं। किं निमित्तं वसति, केन निमित्तेन, कस्मै निमित्ताय। कस्य हेतोः, कस्मात् कारणात्, केन प्रयोजनेन।

* **नियम ६२**— (अधीगर्थदयेशां कर्मणि) स्मरण अर्थ की धातुओं के साथ कर्म में षष्ठी होती है। मातुः स्मरति (खेदपूर्वक माता को स्मरण करता है।)

* **नियम ६३**— (षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन) उपरि, उपरिष्टात्, अधः, अधस्तात्, पुरः, पुरस्तात्, पश्चात्, अग्रे, दक्षिणतः और उत्तरतः के साथ षष्ठी होती है। ग्रामस्य दक्षिणतः उत्तरतः आदि। वृक्षस्य उपरि, उपरिष्टात्, अधः अधस्तात् वा।

* **नियम ६४**— (यतश्च निर्धारणम्) बहुतों में से एक को छाँटने में जिसमें से छाँटा जाय, उसमें षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं। छात्राणां छात्रेषु रामः श्रेष्ठः पटुतमः वा।

* **नियम ६५**— (एङः पदान्तादति) पद (सुबन्त या तिङन्त) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो, अ को पूर्वरूप (ए या ओ जैसा रूप) हो जाता है। (इस सन्धि के संकेत के लिए ए ओ के बाद अवग्रह चिह्न ऽ लगता है)। हरे + अव = हरेऽव। विष्णो + अव = विष्णोऽव।

अभ्यास १४

१. उदाहरण-वाक्य—१. यह देवदत्त की पुस्तक है—इदं देवदत्तस्य पुस्तकम् अस्ति। २. रामस्य पुत्रम् आह्वय। ३. सः ईश्वरं ध्यायति। ४. सः अजायाः दुग्धम् अभिलषति। ५. अध्ययनस्य हेतोः (पढ़ाई के लिए) जीवति। ६. त्वं कस्य हेतोः (कस्मात् कारणात्) शोचसि। ७. मातुः स्मरति। ८. ग्रामस्य पुरः, पुरस्तात्, अग्रे, पश्चात् वा वनम् अस्ति। ९. गृहस्याग्रे वसुधां खनति। १०. शिष्याणां शिष्येषु वा कृष्णः श्रेष्ठः पटुतमः वा। ११. नराणां नरेषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः। १२. अधीतेऽत्र शिष्यः। १३. त्रायतेऽधुना नृपः। १४. दुर्जनः ब्राह्मणं निन्दति। १५. प्राज्ञः ईश्वरमर्चति, जपति वा। १६. छात्रः गुरुमालपति। १७. बालकः गङ्गां तरति (गङ्गायाः जले वा तरति)।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. यह यमुना का जल है। २. इस वृक्ष के ये फूल हैं। ३. बालक की यह पुस्तक है। ४. यह पुस्तक किसकी है? ५. तुम यहाँ पर किसलिए रहते हो? ६. राम पिता को स्मरण करता है। ७. मैं धन के निमित्त जीता हूँ। ८. इस नगर के उत्तर और दक्षिण की ओर वृक्ष हैं। ९. घर के ऊपर, नीचे, आगे और पीछे की ओर आग जल रही है। १०. पुस्तकों में गीता श्रेष्ठ है। **(ख)** ११. मूर्ख गुरु की निन्दा करता है। १२. राम सज्जन की पूजा करता है। १३. कृष्ण शोक करता है। १४. यति प्रभु को जपता है। १५. यह बालक उस बालिका से बात करता है। १६. राम श्याम को बुलाता है। १७. यह फूल जमुना के जल में तैर रहा है। १८. तू ईश्वर का ध्यान करता है। १९. राम धन चाहता है (अभिलष्)। २०. मूर्ख धन के निमित्त ही जीते हैं।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) जनकं स्मरति।	जनकस्य स्मरति।	६२
(२) वृक्षस्य एते पुष्पानि।	वृक्षस्य एतानि पुष्पाणि।	३३, १६
(३) गुरोः निन्दति।	गुरुं निन्दति।	१३

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को लोट्, लङ् और विधिलिङ् में परिवर्तित करो। **(ख)** इदम् और अदस् के नपुंसक लिंग के पूरे रूप लिखो। **(ग)** इन धातुओं के लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—निन्द्, जप्, अर्च्, आह्वे, त्, जीव्, खन्, शुच्।

५. वाक्य बनाओ—हेतोः, निमित्तेन, स्मरति, श्रेष्ठः, पुरः, अग्रे, पश्चात्, दक्षिणतः।

६. संधि करो—याचते + अधुना। हरे + अव। विष्णो + अव। अधीते + अधुना। रोचते + अग्निः। पुस्तके + अस्मिन्। विद्यालये + अस्मिन्। याचते + अमुम्।

७. संधि-विच्छेद करो—अधीतेऽत्र। त्रायतेऽधुना। लोकेऽस्मिन्। केऽत्र। तेऽस्मिन्।

शब्दकोष—३५०+२५=३७५)

अभ्यास १५

(व्याकरण)

(क) पाकः (पचना), उपदेशः (उपदेश)। शयनम् (सोना), गमनम् (जाना), पठनम् (पढ़ना), दानम् (दान), वस्त्रम् (वस्त्र), आयुष्यम्, कुशलम्, भद्रम् (तीनों आशीर्वाद अर्थ में आते हैं, कुशल हो)। (१०)। (ख) गर्ज् (गरजना), मूर्छ् (मूर्छित होना), श्रि (१. आश्रय लेना, २. सेवा करना), भृ (पालन करना), सृ (चलना), वे (बुनना), भूयात् (होवे, आशीर्वाद देना अर्थ में)। (७)। (ग) समक्षम् (सामने), मध्ये (बीच में), अन्तः (अन्दर), अन्तरे (अन्दर), शम् (कुशल हो)। (५)। (घ) तुल्यः, सदृशः, समः (तीनों का अर्थ है—तुल्य)। (३)।

सूचना—(क) पाक—उपदेश, रामवत्। शयन—वस्त्र, गृहवत्। (ख) गर्ज्—वे, भवतिवत्।

व्याकरण (इदम्, अदस् (स्त्री०), षष्ठी, दीर्घसन्धि)

१. इदम्, अदस् के स्त्रीलिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० ३७ ग, ३८ ग)।

२. गर्ज् आदि के रूप भवतिवत्। जैसे—गर्जति, श्रयति, भरति, सरति, वयति।

* नियम ६६— (कर्तृकर्मणोः कृति) कृदन्त शब्द [जिनके अन्त में कृत् प्रत्यय अर्थात् तृच् (तृ), क्तिन् (ति), अच् (अ), घञ् (अ), ल्युट् (अन) आदि हों] के कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है। जैसे—शिशोः शयनम् (बच्चे का सोना), रामस्य गमनम्। सूचना—पुस्तक पढ़ता है, इस प्रकार के वाक्यों का दो प्रकार से अनुवाद होता है, पुस्तकं पठति या पुस्तकस्य पठनं करोति। स्मरण रखें कि धातु का कृदन्तरूप बनाने पर उसके साथ षष्ठी होगी और शुद्ध धातु के साथ द्वितीया।

* नियम ६७— कृते (लिए), समक्षम्, मध्ये, अन्तः और अन्तरे के साथ षष्ठी होती है। भोजनस्य कृते। गुरोः समक्षम्। छात्राणां मध्ये। गृहस्य अन्तः, अन्तरे वा।

* नियम ६८— (दूरान्तिकार्थैः षष्ठी०) दूर और समीपवाची शब्दों के साथ षष्ठी और पंचमी दोनों होती हैं। ग्रामस्य ग्रामाद् वा दूरं, समीपं, पार्श्वं, सकाशं वा।

* नियम ६९— (तुल्यार्थैः०) तुल्यवाची शब्दों (तुल्य, सदृश, सम) के साथ षष्ठी और तृतीया दोनों होती हैं। कृष्णस्य कृष्णेन वा तुल्यः, सदृशः, समः।

* नियम ७०—(चतुर्थी चाशिष्यायुष्य०) आशीर्वादसूचक शब्दों (आयुष्यम्, भद्रम्, कुशलम्, सुखम्, हितम्, अर्थः, प्रयोजनम्, शम्, पथ्यम् आदि) के साथ षष्ठी और चतुर्थी दोनों होती हैं। कृष्णस्य कृष्णाय वा भद्रम्, कुशलम्, शं वा भूयात्।

* नियम ७१— (अकः सवर्णे दीर्घः) अक् (अ इ उ ऋ) के बाद सवर्ण अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर दीर्घ अक्षर हो जाता है। अ या आ + अ या आ = आ। इ या ई + इ या ई = ई। उ या ऊ + उ या ऊ = ऊ। ऋ या ॠ + ऋ या ॠ = ॠ। विद्या + आलयः = विद्यालयः। करोति + इदम् = करोतीदम्। गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः।

अभ्यास १५

१. उदाहरण-वाक्य—१. बच्चे का सोना—शिशोः शयनम्। २. पुस्तकस्य पठनम्। ३. धनस्य दानम्। ४. भोजनस्य कृते (लिए)। ५. गृहस्य मध्ये, अन्तः, अन्तरे वा। ६. अस्याः समक्षम्। ७. ग्रामस्य दूरात्। ८. जनकस्य समीपात्, पार्श्वात्, सकाशाद् वा। ९. शिष्यस्य आयुष्यं भद्रं कुशलं शं वा भूयात्। १०. पठतीयं बाला। ११. स्मरतूपदेशम्। १२. वसतीहेयं बाला (यह लड़की यहाँ रहती है)। १३. मेघाः गर्जन्ति। १४. वस्त्रं वयति। १५. शिशुः मूर्छति। १६. शिष्यः गुरुं श्रयति। १७. जनकः पुत्रं भरति। १८. वायुः सरति।

२. संस्कृत बनाओ—(**क**) १. इस लड़की का पढ़ना उसे अच्छा लगता है। २. उस कन्या का खाना पकाना इसे अच्छा लगता है। ३. इस लड़की का जाना देखो। ४. उस बालिका का सोना देखो। ५. इस गुरु का उपदेश कैसा है? ६. यह कन्या धन का दान करना चाहती है। ७. अध्ययन के लिए (कृते) गुरु के सामने जाओ। ८. भोजन के लिए घर के अन्दर आओ। ९. गाँव के समीप या दूर से इस लड़की के लिए फूल लाओ। १०. राम के तुल्य कोई नहीं है। ११. इस बालक का कुशल हो। १२. इस लड़की की ये पुस्तकें हैं। (**ख**) १३. यह बादल गरजता है। १४. पुत्र मूर्छित होता है। १५. यह बालक पिता का आश्रय लेता है। १६. राजा प्रजा का पालन करता है। १७. हवा चलती है। १८. वह वस्त्र बुनता है। १९. तू खाता है, पीता है, हँसता है और जीता है। २०. मैं ईश्वर का चिन्तन करता हूँ। २१. मैं पानी में तैरता हूँ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अस्य बालिकां पठनम्०।	अस्याः बालिकायाः पठनम्०।	६६, ३३
(२) भोजनस्य पाकः अमुं रोचते।	भोजनस्य पाकः अस्मै रोचते।	३८
(३) इमे पुस्तकानि०।	इमानि पुस्तकानि०।	३३

४. अभ्यास—(**क**) २ (ख) को लोट् और लङ् में बदलो। (**ख**) इदम् और अदस् के स्त्रीलिंग के पूरे रूप लिखो। (**ग**) इन धातुओं के लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—गर्ज्, मूर्छ्, श्रि, भृ, सृ, वे। (**घ**) षष्ठी विभक्ति किन-किन स्थानों पर होती है। सोदाहरण लिखो।

५. वाक्य बनाओ—गमनम्, पाकः, उपदेशः, समक्षम्, मध्ये, अन्तः, कुशलम्, शम्।

६. संधि करो—हिम + आलयः। दैत्य + अरिः। शिष्ट + आचारः। तदा + अगच्छत्। रत्न + आकरः। श्री + ईशः। पठति + इदम्। गच्छति + इयम्। विष्णु + उदयः। होतृ + ऋकारः।

७. संधि-विच्छेद करो—लिखतीदम्। वसतीहासौ। हसतीयम्। इतीह। भानूदयः। इहायम्।

शब्दकोष—३७५+२५=४००) **अभ्यास १६** (व्याकरण)

(क) युष्मद् (तृ) (सर्वनाम)। सिंहः (सिंह), प्रातःकालः (प्रातःकाल), मध्याह्नः (दोपहर), सायंकालः (सायंकाल), मार्गः (मार्ग)। निशा (रात्रि)। (७)। (ख) सेव् (सेवा करना), लभ् (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहना), याच् (माँगना), वृत् (होना), ईक्ष् (देखना), निरीक्ष् (१. देखना, २. निरीक्षण करना), वन्द् (प्रणाम करना), भाष् (कहना), कूर्द् (कूदना), यत् (यत्न करना), शिक्ष् (सीखना), कम्प् (काँपना), भिक्ष् (माँगना), ईह् (चाहना), शुभ् (शोभित होना), रम् (१. लगना, २. रमण करना)। (१८)

सूचना—(क) सिंह—मार्ग, रामवत्, (ख) सेव्—रम्, सेवतेवत्।

व्याकरण (युष्मद्, लट् (आ०), सप्तमी, श्चुत्वसन्धि)

१. युष्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ३५)।

२. सेव्, लट् (आत्मनेपद)

			संक्षिप्तरूप—एक०	द्वि०	बहु०	
सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र० पु०	अते	एते	अन्ते	प्र० पु०
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म० पु०	असे	एथे	अध्वे	म० पु०
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ० पु०	ए	आवहे	आमहे	उ० पु०

संक्षिप्त रूप लगाकर लभ् आदि के रूप बनाओ। जैसे—लभते, वर्धते, मोदते, वर्तते, ईक्षते, वन्दते, भाषते, कूर्दते, यतते, शिक्षते, ईहते, शोभते, रमते।

सूचना—भ्वादिगण (१) की सभी आत्मनेपदी धातुओं के रूप सेव् के तुल्य चलेंगे। पूर्वोक्त, रुच्, त्रै आदि आत्मनेपदी धातुओं के भी रूप सेव् के तुल्य चलेंगे।

* **नियम ७२**— (आधारोऽधिकरणम्) किसी क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं, जहाँ पर या जिसमें वह कार्य किया जाता है।

* **नियम ७३**— (सप्तम्यधिकरणे च) अधिकरण कारक में सप्तमी होती है। विद्यालये पठति। पाठशालायाम् उपाध्यायाः सन्ति। (नियम ६४ भी देखो।)

* **नियम ७४**— 'विषय में, बारे में, अर्थ में' तथा समय-बोधक शब्दों में सप्तमी होती है। मोक्षे इच्छास्ति (मोक्ष के विषय में इच्छा है)। दिने, दिवसे, प्रातःकाले, मध्याह्ने, सायंकाले वा कार्यं करोति। शैशवे, यौवने, वार्धक्ये (बाल्य, यौवन, वृद्धत्व समय में) वा पठति।

* **नियम ७५**— (स्तोः श्चुना श्चुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः श् और चवर्ग हो जाता है। जैसे—रामस् + च = रामश्च। कस् + चित् = कश्चित्। सत् + चित् = सच्चित्। शार्ङ्गिन् + जय = शार्ङ्गिञ्जय। याच् + ना = याच्ञा।

सूचना—स्मरण रखें कि रामः, बालः, कः आदि पुंलिंग एकवचन में स् के स्थान पर ही विसर्ग रहता है, अतः सन्धि के कार्यों में स् रखा जाता है। आगे भी स् = : ही सन्धि-नियमों में समझें।

अभ्यास १६

१. उदाहरण-वाक्य—१. घर में बालक है—गृहे बालकः **वर्तते**। २. विद्यालये छात्राः बालिकाश्च वर्तन्ते। ३. स बालः तच्च फलम् आसने वर्तेते। ४. विद्या धर्मेण शोभते। ५. सिंहः वने निशायां भ्रमति। ६. यतिः धर्मे रमते। ७. सायंकाले मार्गे बालाः कूर्दन्ते। ८. त्वं गुरुं सेवसे, सुखं लभसे, मोदसे, वर्धसे च। ९. कविः नृपं धनं याचते, तं भाषते वन्दते च। १०. यः दुःखं सहते, विद्यां शिक्षते, अन्नं भिक्षते, ज्ञानमीहते च, सः लोके मोदते। ११. त्वया सहायं कः अस्ति? १२. तुभ्यं किं रोचते? १३. तव पुस्तकमहमीक्षे। १४. त्वयि सत्यं वर्तते। १५. वन्दे मातरम्।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. तू गुरु की सेवा करता है, सुख पाता है और सुखपूर्वक रहता है। २. नगर में मनुष्य हैं। ३. देवदत्त मार्ग में संन्यासी को देखता है। (ईक्ष्)। ४. मोक्ष के विषय में तुम यत्न करते हो। ५. तुम दुःख सहते हो, गुरु की सेवा करते हो और संसार में शोभित होते हो। ६. वह धन में रमता है। ७. वृक्ष काँपता है (कम्प्)। ८. साधु राजा से अन्न माँगता है (भिक्ष्)। ९. दिनेश पिता को प्रणाम करता है, घर में कूदता है और सत्य ही बोलता है (भाष्)। १०. विद्या सत्य से शोभित होती है। ११. तुम क्या चाहते हो (ईह्)? १२. पशुओं में सिंह श्रेष्ठ है। **(ख)** १३. मध्याह्न में तू यहाँ आना। १४. मैं तुमको बुलाता हूँ। १५. तेरे साथ कौन है? १६. क्या तुझे फल अच्छा लगता है? १७. तेरी पुस्तक कहाँ है? १८. तुझमें ज्ञान है। १९. तू बाल्यकाल में विद्या सीखता है। २०. तू धन, सुख और ज्ञान पाता है।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) त्वं नृपस्य सेवसे।	त्वं नृपं सेवसे।	१३
(२) साधुः नृपात् अन्नं भिक्षते।	साधुः नृपम् अन्नं भिक्षते।	२१
(३) विद्या सत्यात् शोभते।	विद्या सत्येन शोभते।	२४

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ। **(ख)** युष्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो। **(ग)** इनके लट् के रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्, वृत्, ईक्ष्, भाष्, यत्, शिक्ष्, भिक्ष्, शुभ्, रम्। **(घ)** परस्मैपद और आत्मनेपद की पहचान बताओ।

५. वाक्य बनाओ—श्रेष्ठः, दिने, शैशवे, सायंकाले, सेवते, लभते, वर्तते, ईक्षे, यतसे।

६. संधि करो—रामस् + च। हरिस् + च। बालस् + चलति। सिंहास् + चरन्ति। तत् + च। उत् + चयः। सन् + जयः। हरिस् + शेते। सद् + जनः। उत् + चारणम्। तत् + चरित्रम्। कस् + चन।

७. संधि-विच्छेद करो—बालिकाश्च। हरिश्च। तच्च। इतश्च। उच्चरति। सच्चरित्रः। दुश्चरित्रः।

शब्दकोष—४००+२५=४२५) **अभ्यास १७** (व्याकरण)

(क) अस्मद् (मैं) (सर्वनाम)। स्नेहः (स्नेह), विश्वासः (विश्वास), अभिलाषः (इच्छा), मृगः (हरिण), शरः (बाण)। शास्त्रम् (शास्त्र)। श्रद्धा (श्रद्धा), निष्ठा (विश्वास), रतिः (१. प्रेम, २. कामदेव की स्त्री)। (१०)। (ख) स्निह् (स्नेह करना), क्षिप् (फेंकना), मुच् (छोड़ना), अस् (फेंकना), विश्वस् (विश्वास करना), आद्र (आदर करना), कृतः (किया), सति (होने पर)। (८)। (घ) आसक्तः (१. अनुरक्त, २. लगा हुआ), युक्तः (लगा हुआ), लग्नः (लगा हुआ), अनुरक्तः (प्रेमयुक्त), प्रवीणः (चतुर), कुशलः (निपुण), निपुणः (चतुर)। (७)।

सूचना—(क) स्नेह—शर, रामवत्। शास्त्र, गृहवत्।

व्याकरण (अस्मद्, लोट् (आ०), सप्तमी, ष्टुत्वसन्धि)

१. अस्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० ३६)

२. सेव्, लोट् (आत्मनेपद)

संक्षिप्तरूप—एक०	द्वि०	बहु०	
सेवताम् सेवेताम् सेवन्ताम्	अताम्	एताम्	अन्ताम्	प्र० पु०
सेवस्व सेवेथाम् सेवध्वम्	अस्व	एथाम्	अध्वम्	म० पु०
सेवै सेवावहै सेवामहै	ऐ	आवहै	आमहै	उ० पु०

३. स्निह् आदि के लट् (प्र० १) में क्रमशः ये रूप होंगे—स्निह्यति, क्षिपति, मुञ्चति, अस्यति, विश्वसिति, आद्रियते। उपर्युक्त रूप बनाकर प्रथम चार के रूप भवतिवत्।

* नियम ७६— प्रेम, आसक्ति या आदरसूचक धातुओं और शब्दों (स्निह्, अभिलष्, अनुरञ्ज्, आद्र, रति, आसक्त आदि) के साथ सप्तमी होती है। मयि स्नेहः।

* नियम ७७— (यस्य च भावेन भावलक्षणम्) एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होने पर पहली क्रिया में सप्तमी होती है। कर्तृवाच्य में कर्ता और कृदन्त में सप्तमी होती है। कर्मवाच्य में कर्म और कृदन्त में सप्तमी होगी, कर्ता में तृतीया। प्रथम क्रिया में कृदन्त का प्रयोग होना चाहिए। रामे वनं गते दशरथः मृतः।

* नियम ७८— (आयुक्तकुशलाभ्याम्० साधुनिपुणाभ्याम्०) संलग्न अर्थवाले शब्दों (व्यापृतः, लग्नः, आसक्तः, युक्तः, व्यग्रः, तत्परः) और चतुर अर्थवाले शब्दों (कुशलः, निपुणः, साधुः, पटुः, प्रवीणः, दक्षः, चतुरः) के साथ सप्तमी होती है। कार्ये लग्नः, तत्परः, युक्तः वा। शास्त्रे कुशलः, निपुणः, दक्षः वा।

* नियम ७९— क्षिप्, मुच्, अस् (फेंकना अर्थ की) धातुओं के साथ तथा विश्वास और श्रद्धा अर्थवाली धातुओं और शब्दों (विश्वसिति, विश्वासः, श्रद्धा, निष्ठा, आस्था) के साथ सप्तमी होती है। मृगे बाणं क्षिपति। न विश्वसेदविश्वस्ते।

* नियम ८०— (ष्टुना ष्टुः) स् या तवर्ग के बाद में या पहले ष् या टवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः ष् और टवर्ग हो जाते हैं। जैसे—रामस्+षष्ठः = रामष्षष्ठः। तत्+टीका = तट्टीका। इष्+तम् = इष्टम्। राष्+त्रम् = राष्ट्रम्।

अभ्यास १७

(व्याकरण)

शब्दकोष—४००+२५=४२५)

(क) अस्मद् (मैं) (सर्वनाम)। स्नेहः (स्नेह), विश्वासः (विश्वास), अभिलाषः (इच्छा), मृगः (हरिण), शरः (बाण)। शास्त्रम् (शास्त्र)। श्रद्धा (श्रद्धा), निष्ठा (विश्वास), रतिः (१. प्रेम, २. कामदेव की स्त्री)। (१०)। (ख) स्निह् (स्नेह करना), क्षिप् (फेंकना), मुच् (छोड़ना), अस् (फेंकना), विश्वस् (विश्वास करना), आदृ (आदर करना), कृतः (किया), सति (होने पर)। (८)। (घ) आसक्तः (१. अनुरक्त, २. लगा हुआ), युक्तः (लगा हुआ), लग्नः (लगा हुआ), अनुरक्तः (प्रेमयुक्त), प्रवीणः (चतुर), कुशलः (निपुण), निपुणः (चतुर)। (७)।

सूचना—(क) स्नेह—शर, रामवत्। शास्त्र, गृहवत्।

व्याकरण (अस्मद्, लोट् (आ०), सप्तमी, ष्टुत्वसन्धि)

१. अस्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० ३६)

२. सेव्, लोट् (आत्मनेपद) संक्षिप्तरूप—एक० द्वि० बहु०

सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र० पु०	अताम्	एताम्	अन्ताम्	प्र० पु०
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म० पु०	अस्व	एथाम्	अध्वम्	म० पु०
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ० पु०	ऐ	आवहै	आमहै	उ० पु०

३. स्निह् आदि के लट् (प्र० १) में क्रमशः ये रूप होंगे—स्निह्यति, क्षिपति, मुञ्चति, अस्यति, विश्वसिति, आद्रियते। उपर्युक्त रूप बनाकर प्रथम चार के रूप भवतिवत्।

* **नियम ७६**— प्रेम, आसक्ति या आदरसूचक धातुओं और शब्दों (स्निह्, अभिलष्, अनुरञ्ज्, आदृ, रति, आसक्त आदि) के साथ सप्तमी होती है। मयि स्नेहः।

* **नियम ७७**— (यस्य च भावेन भावलक्षणम्) एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होने पर पहली क्रिया में सप्तमी होती है। कर्तृवाच्य में कर्ता और कृदन्त में सप्तमी होती है। कर्मवाच्य में कर्म और कृदन्त में सप्तमी होगी, कर्ता में तृतीया। प्रथम क्रिया में कृदन्त का प्रयोग होना चाहिए। रामे वनं गते दशरथः मृतः।

* **नियम ७८**— (आयुक्तकुशलाभ्याम्० साधुनिपुणाभ्याम्०) संलग्न अर्थवाले शब्दों (व्यापृतः, लग्नः, आसक्तः, युक्तः, व्यग्रः, तत्परः) और चतुर अर्थवाले शब्दों (कुशलः, निपुणः, साधुः, पटुः, प्रवीणः, दक्षः, चतुरः) के साथ सप्तमी होती है। कार्ये लग्नः, तत्परः, युक्तः वा। शास्त्रे कुशलः, निपुणः, दक्षः वा।

* **नियम ७९**— क्षिप्, मुच्, अस् (फेंकना अर्थ की) धातुओं के साथ तथा विश्वास और श्रद्धा अर्थवाली धातुओं और शब्दों (विश्वसिति, विश्वासः, श्रद्धा, निष्ठा, आस्था) के साथ सप्तमी होती है। मृगे बाणं क्षिपति। न विश्वसेदविश्वस्ते।

* **नियम ८०**— (ष्टुना ष्टुः) स् या तवर्ग के बाद में या पहले ष् या टवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः ष् और टवर्ग हो जाते हैं। जैसे—रामस्+षष्ठः = रामष्षष्ठः। तत्+टीका = तट्टीका। इष्+तम् = इष्टम्। राष्+त्रम् = राष्ट्रम्।

अभ्यास १७

१. उदाहरण-वाक्य—१. वह बालक से स्नेह करता है—सः बालके स्निह्यति। २. तस्य मम पुत्रे स्नेहः वर्तते। ३. अस्माकं धर्मेऽभिलाषः वर्तताम्। ४. नृपः प्रजासु आद्रियते। ५. धर्मे रतिः वर्तताम्। ६. सत्ये मम श्रद्धा, निष्ठा, विश्वासः वा वर्तते। ७. जनकः पुत्रे विश्वसिति। ८. कार्ये कृते सति अहं वनमागच्छम्। ९. भोजने कृते सति सः विद्यालयमगच्छत्। १०. रामः तस्यां कन्यायाम् अनुरक्तः अस्ति। ११. कृष्णः शास्त्रेषु निपुणः, कुशलः, प्रवीणः वा अस्ति। १२. अहं कार्ये लग्नः, युक्तः, आसक्तः वा अस्मि। १३. सेनापतिः मृगे शरान् मुञ्चति, क्षिपति, अस्यति वा। १४. छात्रः गुरुं सेवताम्, विद्यां लभताम्, दुःखं सहताम्, ज्ञानेन वर्धतां मोदतां च। १५. त्वं मोदस्व, अहं शिक्षे।

२. संस्कृत बनाओ—**(क)** १. माता पुत्र से स्नेह करती है। २. वह सत्य में विश्वास करता है। ३. गुरु शिष्यों में आदर पाता है। ४. हरि रमा पर अनुरक्त है। ५. हमारी धर्म में रति है। ६. मेरी ईश्वर में श्रद्धा और निष्ठा है। ७. मेरी सत्य में अभिलाषा बढ़े। ८. मेरे भोजन कर लेने पर बालक यहाँ आया। ९. बालक के सोने पर पिता घर से बाहर आया। १०. मैं इस समय अध्ययन में लगा हुआ हूँ। ११. कृष्ण शास्त्रों में निपुण और कुशल है। १२. राजा ने मृगों पर बाण चलाये (मुच्, क्षिप्)। **(ख)** १३. साधु भिक्षा माँगे (भिक्ष्)। १४. वृक्ष काँपे। १५. मैं सत्य में रमण करूँ (रम्)। १६. तू प्रसन्न हो (मुद्)। १७. तू बढ़। १८. मैं कूदूँ। १९. मैं सेवा करूँ। २०. तू देख (ईक्ष्)।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) मम भोजनं कृते सति०।	मयि भोजने कृते सति।	७७, ३३
(२) पुत्रस्य शयनं कृते सति०।	पुत्रेण शयने कृते सति।	७७, ३३
(३) नृपेण मृगेषु शराः अक्षिपत्।	नृपः मृगेषु शरान् अक्षिपत्।	४

४. अभ्यास—**(क)** २ (ख) को बहुवचन बनाओ। **(ख)** अस्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो। **(ग)** सप्तमी किन स्थानों पर होती है, सोदाहरण लिखो। **(घ)** लोट् (आ०) के संक्षिप्त रूप बताओ।

५. वाक्य बनाओ—स्निह्यति, आद्रियते, विश्वसिति, क्षिपति, मुञ्चति, अस्यति, आसक्तः, लग्नः, निपुणः, साधुः, मह्यम्, अस्माकम्, मयि, सेवस्य, वर्तताम्।

६. संधि करो—हरिस् + षष्ठः। एतत् + टीका। इष् + तः। आकृष् + तः। इष् + तिः। उत् + डीनः। उत् + टंकनम्। पृष् + तम्। सृष् + तिः। स्रष् + ता। कृष् + नः। विष् + नुः।

७. संधि-विच्छेद करो—रामष्षष्ठः। उड्डयनम्। तट्टीका। सृष्टिः। विष्णुः।

८. शुद्ध करो—अहं सेवताम्। त्वं मोदै। सः रमतु। सः लभतु। त्वम् ईक्षताम्। ते वर्तताम्। त्वं लभताम्। अहं यतताम्। ते सहन्तु। त्वं भाषै। अहं वर्धताम्।